Toppersnotes®
Unleash the topper in you

उत्तर प्रदेश

ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत अधिकारी

UTTAR PRADESH SUBORDINATE SERVICE SELECTION COMMISSION

भाग – 1

सामान्य हिन्दी

SIERRA INNOVATIONS

UP-VDO

क्र.सं.	अध्याय हिन्दी	पृष्ठ सं.
1.	वर्ण विचार	1
2.	संधि	5
3.	समास	21
4.	संज्ञा	27
5.	सर्वनाम	29
6.	लिंग	30
7.	वचन	35
8.	कारक	36
9.	विशेषण	40
10.	क्रिया	41
11.	काल	49
12.	उपसर्ग	51
13.	प्रत्यय	54
14.	अव्यय/अविकारी शब्द	58
15.	तत्सम - तद्भव	62
16.	देशज शब्द, विदेशज एवं संकर शब्द	64
17.	वाक्य	68
18.	विराम चिह्न और उनके प्रयोग	76
19.	वर्तनी शुद्धि	80
20.	शुद्ध–वर्तनी एवं वाक्य शुद्धि	83
21.	शब्द युग्म	94
22.	अनेकार्थक शब्द	105
23.	वाक्य के लिए एक शब्द	108
24.	विलोम – शब्द	114
25.	पर्यायवाची	122
26.	मुहावरे	125
27.	लोकोक्ति	132

28.	पारिभाषिक शब्दावली	136
29.	रचना एवं रचनाकार	142

वर्ण विचार

भाषा - परस्पर विचार विनियम को भाषा कहते हैं।

- भाषा संस्कृत के भाष् शब्द से बना है । भाष् का अर्थ है बोलना ।
- भाषा की सार्थक इकाई वाक्य है । वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य, उपवाक्य से छोटी इकाई पदबंध, पदबंध से छोटी इकाई पद (शब्द), पद से छोटी इकाई अक्षर व अक्षर से इकाई ध्वनि या वर्ण है ।
- जैसे - हम शब्द में दो अक्षर (हम) एवं चार वर्ण (ह् अ म् अ) है ।

लिपि -किसी भाषा को लिखनें का ढंग लिपि कहलाता है । हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है । इसकी निम्न विशेषताएँ है ।

(i) यह बाएँ से दायें लिखी जाती है ।
(ii) प्रत्येक वर्ण का एक ही रूप होता है ।
(iii) उच्चारण के अनुरूप लिखी जाती है अर्थात जैसे बोली जाती है, वैसी लिखी जाती है ।

व्याकरण - जिस शास्त्र में शब्दों के शुद्ध रूप एवं प्रयोग के नियमों का निरूपण होता है, उसे व्याकरण कहते है ।

वर्ण - हिंदी भाषा में वर्ण वह मूल ध्वनि है जिसका विभाजन नहीं हो सकता

किसी भी भाषा की सबसे छोटी इकाई (ध्वनि) वर्ण कहलाती है ।
जैसे :- क्, च्, ट् अ, इ, उ

वर्ण के भेद :- 2 प्रकार
(i) स्वर वर्ण (ii) व्यंजन वर्ण

स्वर वर्ण :- स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण स्वर कहलाते है । हिन्दी वर्णमाला में कुल ग्यारह (11) स्वर ध्वनियाँ शामिल की गयी है ।

जैसे - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

स्वरो का वर्गीकरण :- मुख्यतः 5 आधार पर वर्गीकरण किया गया है ।

1. मात्राकाल के आधार पर - 3 प्रकार
(i) हृस्व स्वर - जिनके उच्चारण मे एक मात्रा का समय लगता है -
अ, इ, उ, ऋ (कुल संख्या -4)

नोट :- (इनको एकमात्रिक स्वर, मूल स्वर भी कहते है)

(ii) दीर्घ स्वर - जिनके उच्चारण में दो मात्रा का समय लगता है - आ, ई, ऊ, ए, ऐ ओ, औ (कुल संख्या - 7)

(iii) प्लुत स्वर - जिनके उच्चारण में तीन मात्राओ का समय लगता है - स्वर के प्लुत रूप को दर्शाने के लिए उनके साथ 3 का चिह्न लगाया जाता है ।
जैसे :- अ३, आ३, इ३, ई३, उ३, ऊ३, ए३, ऐ३, ओ३, औ३,

(2) उच्चारण के आधार पर :- (2 प्रकार)
(i) अनुनासिक स्वर - स्वर का उच्चारण करने पर वायु मुख व नाक दोनो से बाहर आती है ।

नोटः- अनुनासिक रूप को दर्शाने के लिए चन्द्रबिंदु का प्रयोग होता है ।
जैसे :- अँ आँ इँ ईं उँ ऊँ एँ, ऐं ओं औं

(ii) अननुनासिक/निरनुनासिक स्वर - जब किसी स्वर का उच्चारण करनें पर श्वास वायु केवल मुख से ही बाहर निकलती है । वह अननुनासिक/ निरनुनासिक स्वर कहलाता है ।
बिना चन्द्रबिन्दू के अपने मूल रूप में लिखे हुए स्वर अनुनासिक माने जाते है ।
जैसे - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ए, ऐ, ओ, औ,

(3) जिह्वा के आधार पर :- (3 प्रकार)
(i) अग्र स्वर :- उच्चारण करने पर जीभ के आगे वाले भाग मे सर्वाधिक कम्पन होना ।
जैसे - इ, ई, ए, ऐ
(ii) मध्य स्वर - उच्चारण करने पर जीभ के मध्य भाग में कम्पन - अ

(iii) पश्च स्वर - उच्चारण करने पर जीभ के पिछले भाग में अधिक कम्पन ।
आ, उ, ऊ, ओ, औ

पहचान :- निम्न सारणी के माध्यम से अग्र, पश्च, मध्यम भाग को जाने

मध्य - अ - मध्य
इ ई ए ऐ - अग्र
आ उ ऊ ओ औ - पश्च

(4) होठों की गोलाई के आधार पर - 2 प्रकार

(i) वृत्ताकार - उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल हो जाना।
जैसे :- उ, ऊ ओ, औ

(ii) अवृत्ताकार - उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल न होकर ऊपर-नीचे फैलना।
जैसे - अ, आ, इ, ई ए, ऐ

(5) मुखाकृति के आधार पर - 04 प्रकार
(i) संवृत स्वर - उच्चारण करने पर मुँह का कम खुलना।
जैसे - इ, ई, उ, ऊ

(ii) अर्द्ध संवृत स्वर - उच्चारण करने पर मुँह का संवृत से थोडा ज्यादा खुलना - ए, ओ

(iii) विवृत - उच्चारण करने पर मुख का सबसे ज्यादा खुलना। जैसे - आ

(iv) अर्द्धविवृत :- उच्चारण करने पर मुँह का विवृत से थोडा कम खुलना।
जैसे - अ, ऐ, औ, ऑ

व्यंजन वर्ण

स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण व्यंजन कहलाते है।
हिन्दी वर्णमाला में कुल 35 मूल (33 + 2 उत्क्षिप्त) व्यंजन ध्वनियाँ होती है।
जिनको तीन भागों में बाँटा गया है।
(i) स्पर्श व्यंजन - (27) (मूल 25 + 2 उत्क्षिप्त)
(ii) अतः स्थ व्यंजन - (04)
(iii) उष्म व्यंजन - (04)

(i) स्पर्श व्यंजन
जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु हमारे मुख के किसी अंग को स्पर्श करने के बाद मुख से बाहर निकलती हैं तो वह स्पर्श व्यंजन कहलाती हैं।

स्पर्श व्यंजन को 5 भागों में बाँटा गया है -
(अ) 'क' वर्ग - क् ख् ग् घ् ङ्
(ब) 'च' वर्ग - च् छ् ज् झ् ञ्
(स) 'ट' वर्ग - ट् ठ् ड् ड़् ढ् ढ़् ण्
(द) 'त' वर्ग - त् थ् द् ध् न्
(य) 'प' वर्ग - प् फ् ब् भ् म्

(ii) अतः स्थ व्यंजन
जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर सर्वप्रथम हमारे मुख के अन्दर स्थित स्वर तंत्रियो में कम्पन होता है, व उसके बाद श्वास वायु मुख में बाहर निकलती हैं तो वह अन्तःस्थ व्यंजन कहलाती हैं।

कुल अन्तः स्थ व्यंजन - 4
जैसे :- य् व् र् ल्

(iii) उष्म व्यंजन
जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु मुख से बाहर निकलते समय हल्की गर्म हो जाती है, तो वह उष्म व्यंजन कहलाता है।

कुल उष्म व्यंजन - 4
जैसे - श् ष् स् ह्

संयुक्त व्यंजन :- इसी श्रेणी मे 4 व्यंजन शामिल किये जाते है।
क्ष - क् + ष
त्र - त् + र
ज्ञ - ज् + ञ
श्र - श् + र

व्यंजनों का वर्गीकरण - मुख्यतः 2 प्रकार
(1) उच्चारण स्थान के आधार पर
(2) प्रयत्न के आधार पर
(1) उच्चारण स्थान के आधार पर -

i. कण्ठ स्थान - 'कण्ठ्य वर्ग'
सूत्र - अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः
अ, आ, क वर्ग (क,ख,ग,घ,ङ) ह, विसर्ग (अः)

ii. तालु स्थान - तालव्य वर्ग
सूत्र - इचुयशानां तालु
इ, ई, च वर्ग (च,छ,ज,झ,ञ) य, श

iii. मूर्धा स्थान - मूर्धन्य वर्ण
सूत्र - ऋटुरषाणां मूर्धा
ऋ,ॠ ट वर्ग (ट,ठ,ड,ड़,ढ,ढ़,ण) र, ष

iv. दन्त स्थान - दन्त्य वर्ण
सूत्र - लृतुलसानां दन्ता
लृ, त वर्ग (त,थ,द,ध,न) ल, स

v. ओष्ठ स्थान - ओष्ठ्य वर्ण
सूत्र - उपूपध्मानीया ना मो ष्ठौ
उ, ऊ, प वर्ग (प,फ,ब,भ,म)
उपध्मानीय वर्ण (ᳵप, ᳵफ)

vi. नासिका स्थान - नासिक्य वर्ण
सूत्र - नासिका अनुस्वारस्य (अं)
ञमङणनानां नासिका च
(ङ् ञ ण न म्)

vii. दन्तोष्ठ स्थान – दन्तोष्ठ्य वर्ण
सूत्र – वकारस्य दन्तोष्ठम् – व

(2) प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

मुख्यतः 3 भागों में बाँटा गया है –
- (i) कंपन के आधार पर
- (ii) श्वास वायु के आधार पर
- (iii) उच्चारण के आधार पर

(i). कंपन के आधार पर – इसके आधार पर दो प्रकार के वर्ण होते हैं।

1) अघोष वर्ण – प्रत्येक वर्ग का पहला + दूसरा वर्ण + श,ष,स+विसर्ग
अघोष वर्ण – ट्रीक – 1,2 बजते ही उष्मा में विसर्जन का अवघोष हो जाता है। प्रत्येक वर्ग का पहला, दूसरा वर्ण, उष्म वर्ण (श,ष,स) विसर्ग

2) घोष वर्ण – प्रत्येक वर्ग का 3,4,5 वर्ण + ड, ढ + य,र,ल,व,ह + सभी स्वर + अनुस्वार
घोष वर्ण – ट्रीक – 3,4,5 की घुस लेते ही सभी स्वरों को ड ढ के साथ नियम अनुसार अंदर कर दिया।
प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण + सभी स्वर + ड ढ + अनुस्वार

(ii). श्वास वायु के आधार पर –
मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं।

1) अल्पप्राण – प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवा वर्ण + ड़ा, र, ल, व + सभी स्वर
अल्प प्राण – ट्रीक –उल्प आयु में 1,3,5 का अन्त हुआ व ड़ के साथ सभी स्वर्ग गये।
अल्पप्राण में आने वाले व्यंजन – प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवाँ वर्ण + अतःस्थ व्यंजन + ड सभी स्वर

2) महाप्राण – प्रत्येक वर्ग का 2,4 वर्ण + ढ + श, ष, स, ह
महाप्राण –महाम 2,4 घण्टे ढका रहने से उष्मा बढ़ती है।
महाप्राण में आने वाले वर्ण – प्रत्येक वर्ग का 2 व 4 वर्ण, + उष्म वर्ण (श,ष,स) + ह वर्ण)

(iii). उच्चारण के आधार पर –
इस आधार पर व्यंजन 8 प्रकार के होते हैं।

1) स्पर्शी व्यंजन (16) क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ
2) स्पर्श संघर्षी व्यंजन (4) – च, छ, ज, झ
3) संघर्षी व्यंजन (4) – श, ष, स, ह
4) नासिक व्यंजन (5) – ङ, ञ, ण, न, म
5) उत्क्षिप्त व्यंजन (2) – ड़, ढ़
6) प्रकंपित व्यंजन (1) – र
7) पार्श्विक व्यंजन (1) – ल
8) संघर्षहीन व्यंजन (2) – य, व

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण तथ्य ''वर्ण विचार'' से संबंधित)

- दीर्घ स्वर को संयुक्त स्वर के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि दीर्घ स्वरों की रचना प्राय दोनों स्वरों के मिलने से होती है।
- सात दीर्घ स्वरों को भी दो भागों समानाक्षर स्वर, संधि स्वर के रूप में विभाजित किया जाता है।

समानाक्षर स्वर	संधि स्वर
(i) आ – अ + अ	ए – अ + इ
(ii) ई – इ + इ	ऐ – अ – ए
(iii) ऊ – उ + उ	औ – अ + ओ

- प्लुत स्वर वर्गीकरण का सर्वप्रथम साक्ष्य पाणिनि की अष्टाध्यायी रचना में मिलता है।
- हिन्दी वर्णमाला में कुछ व्यंजन शब्दों के नीचे नुक्ता (बिन्दु) का प्रयोग किया जाता है, जिन्हे आगत/गृहीत व्यंजन कहा जाता है।
- आगत व्यंजनों की कुल संख्या 05 होती है।

क़ – क़रीब
ख़ – ख़ाना
ग़ – ग़म
ज़ – ज़रा
फ़ – फ़न फ़ाइल (अंग्रेजी)

अंग्रेजी से गृहीत स्वर.
ऑ (ॉ)
जैसे – कॉलेज, डॉक्टर

- हिन्दी भाषा में आगत व्यंजनो का आगमन अरबी/फारसी, अंग्रेजी भाषा से हुआ है।
- हिन्दी भाषा में नुक्ता व्यंजन की शुरूआत का श्रेय हिन्दी विद्वान ''शिवप्रसाद सितारे हिंद'' को जाता है।

(2) काकल वर्ण के अन्तर्गत है, (:) विसर्ग को शामिल किया जाता है।

- वर्त्स वर्णों में न, स, ल को शामिल किया जाता है।
- उच्चारण स्थानों के अलावा शरीर के वे अंग जा उच्चार करनें में सहायक हो करण कहलते हैं। इसकी कुल संख्या चार होती है।
  (1) जिह्वा (2) अधरोष्ठ (नीचे का होंठ) (3) स्वर तंत्रियाँ (4) कोमल तालु
- तालु उच्चारण स्थान में आनें वाले वर्णो को कोमल तालव्य व कठोर तालव्य के रूप में दो भागो में विभाजित किया गया है।
- हिन्दी वर्णमाला में अं (अनुस्वार), अः (विसर्ग) को अयोगवाह वर्ण कहा जाता है। क्योंकि इन वर्णों को न तो स्वरों में जोडा जाता है व न ही व्यंजनों में अतः अयोगवाही वर्ण कहलाते हैं।
- हल् चिह्न (्) व्यंजन के स्वर रहित होनें को परिचायक है। स्वर रहित व्यंजन के साथ हल् का चिह्न लगाया जाता है या फिर खडी पाई वाले व्यंजन चिह्नो की खडी पाई हटा दी जाती है। उसके अर्द्धरूप का प्रयोग किया जाता है।
  जैसे- विद्या, पाठ्य, अपराह्न, पट्टा आदि।

1. नांद या संवार वर्ण – सभी घोष वर्णों को ही कहा जाता है।
2. विवार या श्वास वर्ण – सभी अघोष वर्णों को ही कहा जाता है।
3. स्पृष्ठ वर्ण – सभी स्पर्श व्यंजन वर्णों को ही कहा जाता है।
4. ईषत्स्पृष्ट वर्ण – अन्तस्थ व्यंजन (य,र,ल,व) वर्णों को ही कहा जाता है।
5. ईषद्विवृत वर्ण – उष्म व्यंजन (श, ष, स, ह)
6. रक्त वर्ण –प्रत्येक वर्ग का पाँचवा वर्ण
7. सोष्म व्यंजन वर्ण – प्रत्येक वर्ग का दूसरा व चौथा वर्ण

ध्यान दें – हिन्दी वर्णमाला में मूल रूप से 11 स्वर व 33 व्यंजन सहित कुल 44 वर्ग होते हैं।

हिन्दी वर्णमाला की वर्तमान में अपवादित स्थिति को सारणी के माध्यम से समझें।

स्वर	व्यंजन	कुल
स्वर 11	व्यंजन 33	44
–	ड़, ढ़ + (2) (उत्क्षिप्त व्यंजन)	46
–	अं, अः + (2) (अयोगवाह)	48
–	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र + (4) संयुक्त व्यंजन	52
	क़ ख़ ग़ ज़ फ़ + 5 गृहीत व्यंजन	57

नोट – सर्वमान्य मत हिन्दी वर्णमाला में कुल 44 वर्ण होते हैं।

उत्क्षिप्त वर्ण

जिन ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा मूर्धा को स्पर्श कर तुरन्त नीचे गिरती है, उन्हे उत्क्षिप्त वर्ण कहते हैं।

जैसे – ड़, ढ़

नियम – 1. यदि शब्द की शुरूआत उत्क्षिप्त वर्णों से हो तो लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है।

जैसे – डमरू, ढोलक, डलिया, ढक्कन, डाली

नियम – 2. यदि शब्द के अन्तर्गत इनसे पहले आधा वर्ण आता है तो भी लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है।

जैसे – पण्डित, बुड्ढा, अड्डा, खण्ड, मण्डल आदि।

- उपर्युक्त दोनों नियमों के अलावा प्रत्येक स्थिति में इनके नीचे बिन्दु आता है।
  जैसे – पढ़ाई, लड़ाई, सड़क, पकड़ना, ढूँढ़ना आदि।

रकार/रेफ या र संबंधि नियम

नियम 1. – यदि र् के बाद व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखते हैं अर्थात जिस व्यंजन वर्ण से पहले र् का उच्चारण किया जाता है, र को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखा जाता है।

जैसे – कर्म, धर्म, वर्ण, दर्शक, स्वर्ग, अर्थात् , पुनर्जन्म, पुर्निमाण, आशीर्वाद।

नियम 2. – यदि र् से पहले व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के मध्यय में लिखा जाता है।

जैसे – प्रकाश, प्रभात, प्रेम, क्रम, भ्रम, भ्रष्ट, भ्राता

संधि

संधि का अर्थ–मिलान

संधि की परिभाषा

- दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है वह संधि कहलाता है अर्थात् जब दो ध्वनियाँ आपस में मिलती है तो उसमें रूपान्तर आ जाता है, तब संधि कहलाती है।

  जैसे –

प्रत्येक	–	प्रति + एक
विद्यालय	–	विद्या + आलय
जगदीश	–	जगत + ईश
आशीर्वाद	–	आशीः + वाद

संधि का परिभाषा

कामता प्रसाद के अनुसार

दो निर्दिष्ट अक्षरों के पास–पास आने के कारण उनके मेल से विकार होता है, उसे संधि कहते है।

किशोरीदास वाजपेयी के अनुसार

जब दो या दो से अधिक वर्ण पास–पास आते हैं तो कभी–कभी उसमें रूपान्तर आ जाता है वह संधि कहलाती है।

संधि विच्छेद

- वर्णों के मेल से उत्पन्न ध्वनि परिवर्तन को ही संधि कहते है। परिणामस्वरूप उच्चारण एवं लेखन दोनों ही स्तरों पर अपने मूल रूप से भिन्नता आ जाती है। अतः वर्णों/ध्वनि को पुनः मूल रूप में लाना ही संधि विच्छेद कहलाता है।

  जैसे–

वर्ण	+	मेल	=	संधि युक्त शब्द
रमा	+	ईश	=	रमेश
आ	+	ई	=	ए

- यहाँ (आ + ई) दो वर्णों के मेल से विकार स्वरूप 'ए' ध्वनि उत्पन्न हुई और संधि का जन्म हुआ।

  संधि विच्छेद के लिए पुनः मूल रूप में लिखना चाहिए।

  जैसे–

शुभ	+	आगमन	–	शुभागमन
सत्	+	आचरण	–	सदाचरण
निः	+	ईश्वर	–	निरीश्वर

संधि के भेद		
स्वर संधि	**व्यंजन संधि**	**विसर्ग संधि**
(स्वर + स्वर का मेल) महा + आत्मा (आ + आ)	स्वर + व्यंजन → परि + छेद (इ + छ) व्यंजन + स्वर → दिक् + अम्बर (क् + अ) व्यंजन + व्यंजन → सत् + वाणी (त् + व्)	विसर्ग + स्वर → मनः + अविराम (ः + अ) विसर्ग + व्यंजन → तपः + वन (ः + व्)

1. स्वर संधि

स्वर से स्वर का जब मेल होता है तो उसमें विशेष विकार की स्थिति के उत्पन्न होनें को ही स्वर संधि कहा जाता है।

जैसे– विद्यार्थी – विद्या + अर्थी
आ + अ = आ

स्वर संधि के मुख्यतः पाँच भेद होते है–

स्वर संधि के भेद

↓ दीर्घ संधि ↓ गुण संधि ↓ वृद्धि संधि ↓ यण संधि ↓ अयादि संधि

(i) दीर्घ संधि

- इस संधि में दो समान स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते है।
- यदि अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, के बाद वे ही (अर्थात् समान) लघु या दीर्घ स्वर आ जायें तो दोनों मिलकर आ, ई, ऊ, ॠ हो जाते हैं।

  (अ + अ = आ)

अ + अ = आ	(i) युग + अन्तर = युगान्तर युग् अ + अन्तर युगान्तर युग् आ न्तर युग् अ + अन्तर युग + अन्तर	(ii) स्व + अर्थ = स्वार्थ स्व् अ + अर्थ आ स्व् आ र्थ स्वार्थ
अ + आ = आ	(i) हिम + आलय = हिमालय हिम् अ + आ लय आ हिम् आ लय हिमालय	(ii) गमन + आगमन = गमनागमन गमन् अ + आगमन आ गमन् आ गमन गमना गमन
आ + अ = आ	(i) तथा + अपि = तथापि तथ् आ + अ पि आ त थ् आ पि तथापि	(ii) महा + अमात्य = महामात्य मह् आ + अमात्य आ म ह् आ मात्य महामात्य
आ + आ = आ	(i) प्ररेणा + आस्पद = प्रेरणास्पद प्रेरण् आ + आ स्पद आ प्रेरण् आ स्पद प्रेरणास्पद	(ii) चिकित्सा + आलय = चिकित्सालय चिकित्स् आ + आलय आ चिकित्स् आ लय चिकित्सालय
इ + इ = ई	(i) अति + इव = अतीव अत् + इव ई अत् + ई व अतीव	(ii) कवि + इन्द्र = कवीन्द्र क व् इ + इन्द्र ई क व् ई न्द्र कवीन्द्र
इ + ई = ई	प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा प्रत् इ + ईक्षा ई प्र त् ई क्षा प्रतीक्षा	
ई + इ = ई	मही + ईन्द्र = महीन्द्र मह् ई + ईन्द्र ई मह् ई न्द्र महीन्द्र	
ई + ई = ई	नारी + ईश्वर = नारीश्वर ना र् ई + ईश्वर नार् ई श्वर नारीश्वर	
उ + उ = ऊ	गुरू + उपदेश = गुरूपदेश गुर् उ + उपदेश ऊ	

	गुर् + ऊ पदेश गुरूपदेश	
उ + ऊ = ऊ	लघु + ऊर्मि = लघूर्मि ल घ् उ + ऊर्मि ऊ लघ् ऊ र्मि लघूर्मि	
ऊ + ऊ = ऊ	सरयू + ऊर्मि = सरयूर्मि सरय् ऊ + ऊर्मि ऊ सरय् उ र्मि सरयूर्मि	
ऋ + ऋ = ॠ	पितृ + ऋण = पितृण पित् ॠ + ऋण ॠ पित् ॠ ण पितृण	

नोट – ऐसे ऋ वाली संधियो से बने दीर्घ ॠ वाले शब्द हिन्दी में प्रचलित नही है।

दीर्घ संधि के उदाहरण

अन्नाभाव	–	अन्न + अभाव	अ + अ = आ	परम + अर्थ = परमार्थ
भोजनालय	–	भोजन + आलय	अ + आ = आ	
विद्यार्थी	–	विद्या + अर्थी	आ + अ = आ	
महात्मा	–	महा + आत्मा	आ + आ = आ	
गिरीन्द्र	–	गिरि + इन्द्र	इ + इ = ई	
महीन्द्र	–	मही + इन्द्र	ई + इ = ई	
गिरीश	–	गिरि + ईश	इ + ई = ई	
रजनीश	–	रजनी + ईश	ई + ई = ई	रवि + इन्द्र = रवीन्द्र
भानूदय	–	भानु + उदय	उ + उ = ऊ	मुनी + इन्द्र = मुनीन्द्र
वधूत्सव	–	वधू + उत्सव	ऊ + उ = ऊ	अभिप्सा = अभि + ईप्सा
रामावतार	–	राम + अवतार	अ + अ = आ	भय + आक्रांत = भयक्रांत
सत्यार्थी	–	सत्य + अर्थी	अ + अ = आ	स्नेह + आविष्ट = स्नेहाविष्ट
रामायण	–	राम + अयन	अ + अ = आ	
धर्माधर्म	–	धर्म + अधर्म	अ + अ = आ	
पराधीन	–	पर + अधीन	अ + अ = आ	
पुण्डरीकाक्ष	–	पुण्डरिक + अक्ष	अ + अ = आ	
दैत्यारि	–	दैत्य + अरि	अ + अ = आ	
शताब्दी	–	शत + अब्दी	अ + अ = आ	
धर्मार्थ	–	धर्म + अर्थ	अ + अ = आ	
मुरारि	–	मुर + अरि	अ + अ = आ	

नीलाम्बर	–	नील + अम्बर	अ + अ = आ	
परमार्थ	–	परम + अर्थ	अ + अ = आ	
रूद्राक्ष	–	रुद्र + अक्ष	अ + अ = आ	
स्वाधीन	–	स्व + अधीन	अ + अ = आ	
गीताजंली	–	गीत + अंजली	अ + अ = आ	
दीपावली	–	दीप + अवली	अ + अ = आ	
प्रार्थी	–	प्र + अर्थी	अ + अ = आ	
छिद्रन्वेषी	–	छिद्र + अन्वेषी	अ + अ = आ	
मूल्यांकन	–	मूल्य + अंकन	अ + अ = आ	
अन्त्याक्षरी	–	अंत्य + अक्षरी	अ + अ = आ	
सापेक्ष	–	स + अपेक्ष	अ + अ = आ	
अभयारण्य	–	अभय + अरण्य	अ + अ = आ	
सत्यार्थी	–	सत्य + अर्थी	अ + अ = आ	
नारायण	–	नार + अयन	अ + अ = आ	कंटक + आकीर्ण = कंटाकाकीर्ण
परमात्मा	–	परम + आत्मा	अ + आ = आ	
पदावलि	–	पद + अवलि	अ + आ = आ	
रत्नाकर	–	रत्न + आकर	अ + आ = आ	
निगमागमन	–	निगम + आगमन	अ + आ = आ	
पद्माकर	–	पद्म + आकर	अ + आ = आ	
शरणागत	–	शरण + आगत	अ + आ = आ	
सत्याग्रह	–	सत्य + आग्रह	अ + आ = आ	
विद्याध्ययन	–	विद्या + अध्ययन	आ + अ = आ	
परीक्षार्थी	–	परीक्षा + अर्थी	आ + अ = आ	
रेखांकित	–	रेखा + अंकित	आ + अ = आ	
मुक्तावली	–	मुक्ता + अवली	आ + अ = आ	
दावानल	–	दावा + अनल	आ + अ = आ	
तथापि	–	तथा + अपि	आ + अ = आ	
महाशय	–	महा + आशय	आ + आ = आ	
द्राक्षासव	–	द्राक्षा + आसव	आ + आ = आ	
विद्यालय	–	विद्या + आलय	आ + आ = आ	
महात्मा	–	महा + आत्मा	आ + आ = आ	
प्रेरणास्पद	–	प्रेरणा + आस्पद	आ + आ = आ	
कवीन्द्र	–	कवि + इन्द्र	इ + इ = ई	
अतिव	–	अति + इव	इ + इ = ई	
अभीष्ट	–	अभि + इष्ट	इ + इ = ई	
अतीत	–	अति + इत	इ + ई = ई	
महीन्द्र	–	मही + इन्द्र	ई + इ = ई	
महतीच्छा	–	महती + इच्छा	ई + इ = ई	

कपीश	–	कपि + ईश	ई + इ = ई	
प्रतीक्षा	–	प्रति + ईक्षा	ई + इ = ई	
अधीक्षण	–	अधि + इक्षण	ई + इ = ई	
अभीप्सा	–	अभि + इप्सा	ई + इ = ई	
नारीश्वर	–	नारी + ईश्वर	ई + ई = ई	प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा
सतीश	–	सती + ईश	ई + ई = ई	
लघूत्तम	–	लघु + उत्तम	उ + उ = ऊ	
सूक्ति	–	सु + उक्ति	उ + उ = ऊ	
अनूदित	–	अनु + उदित	उ + उ = ऊ	
गुरूपदेश	–	गुरु + उपदेश	उ + उ = ऊ	
भानूदय	–	भानु + उदय	उ + उ = ऊ	
सिंधूर्मि	–	सिंधु + ऊर्मि	उ + ऊ = ऊ	
भानूर्जा	–	भानु + ऊर्जा	उ + ऊ = ऊ	
वधूत्सव	–	वधू + उत्सव	ऊ + उ = ऊ	
चमूत्तम	–	चमू + उत्तम	ऊ + उ = ऊ	
मातृण	–	मातृ + ऋण	ऋ + ऋ = ॠ	
होतृकार	–	होतृ + ऋकार	ऋ + ऋ = ॠ	

दीर्घ संधि की पहचान

दीर्घ संधि युक्त शब्दों में अधिकांशत आ, ई, ऊ की मात्राएँ (ा, ी, ू) आती है और इनका विच्छेद इन्ही मात्राओं से किया जाता है। जैसे – विद्यालय – विद्या + आलय

अपवाद

शक + अन्धु = शकन्धु   मूसल + धार = मूसलाधार
कर्क + अन्धु = कर्कन्धु   मनस् + ईषा = मनीषा
विश्व + मित्र = विश्वामित्र युवन् + अवस्था = युवावस्था

(ii) गुण संधि

- जब अ, आ के बाद इ, ई आए तब दोनों मिलकर 'ए' हो जाते है।
  जैसे– देवेन्द्र – देव + इन्द्र (अ + इ = ए)
- अ, आ के बाद उ, ऊ आए तो दोनों मिलकर ओ हो जाते हैं।
  जैसे– वीरोचित – वीर + उचित (अ + उ = ओ)
- अ, आ के बाद ऋ, ॠ आए तो दोनों मिलकर अर् हो जाते हैं।
  जैसे–महर्षि–महा + ऋषि (आ + ऋ = अर)

गुण संधि की पहचान

गुण संधि युक्त शब्दों में अधिकांशत ए, ओ की मात्राएँ (े, ो) या र् आता है (र्‍) और इनका विच्छेद इन्हीं मात्राओं से किया जाता है।

गुण संधि को समझाने का तरीका

अ + इ = ए	गज + इन्द्र = गजेन्द्र गज् अ + इन्द्र ए गज् ऐ न्द्र गजेन्द्र नर + इन्द्र = नरेन्द्र नर् अ इ न्द्र ए नर् ए न्द्र नरेन्द्र
अ + उ त्र ओ	पर + उपकार = परोपकार पर् अ + उपकार ओ पर् ओ प कार परोपकार
आ + ऊ त्र ओ	गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि गंग् आ + उर्मि ओ

	गंग् ओ र्मि गंगोर्मि
अ + ऋ त्र अर्	सप्त + त्रिषि त्र सप्तर्षि सप्त् अ + ऋषि अर् सप्त् अर् षि सप्तर्षि
आ + ऋ त्र अर्	वर्षा + ऋतु त्र वर्षर्तु वर्ष अ + ऋतु अर् वर्ष अर, तु वर्षर्तु

उदाहरण

गणेश	– गण + ईश	अ + ई = ए
यथेष्ट	– यथा + इष्ट	आ + इ = ए
रमेश	– रमा + ईश	आ + ई = ए
जलोर्मि	– जल + ऊर्मि	अ + ऊ = ओ
गंगोर्मी	– गंगा + ऊर्मि	आ + ऊ = ओ
कण्वर्षि	– कण्व + ऋषि	अ + ऋ = अर्
शुभेच्छा	– शुभ + इच्छा	अ + इ = ए
नरेश	– नर + ईश	अ + ई = ए
जलोष्मा	– जल + ऊष्मा	अ + ऊ = ओ
सप्तर्षि	– सप्त + ऋषि	अ + ऋ = अर्
नरेन्द्र	– नर + इन्द्र	अ + इ = ए
भारतेन्दु	– भारत + इन्दु	अ + इ = ए
मृगेन्द्र	– मृग + इन्द्र	अ + इ = ए
स्वेच्छा	– स्व + इच्छा	अ + इ = ए
देवेन्द्र	– देव + इन्द्र	
प्रेषिती	– प्र + ईषिती	
इतरेतर	– इतर + इतर	
अंत्येष्टि	– अन्त्य + इष्टि	
नृपेन्द्र	– नृप + इन्द्र	
महेन्द्र	– महा + इन्द्र	
अपेक्षा	– अप + ईक्षा	
प्रेक्षक	– प्र + ईक्षक	
राकेश	– राका + ईश	
गुड़ाकेश	– गुड़ाका + ईश	
सूर्योदय	– सूर्य + उदय	
सोदाहरण	– स + उदाहरण	
आद्योपान्त	– आद्य + उपान्त	
प्राप्तोदक	– प्राप्त + उदक	
जन्मोत्सव	– जन्म + उत्सव	
अन्योक्ति	– अन्य + उक्ति	
नीलोत्पल	– नील + उत्पल	
परोपकार	– पर + उपकार	
सर्वोदय	– सर्व + उदय	
अन्त्योदय	– अन्त्य + उदय	
महोदय	– महा + उदय	
महोत्सव	– महा + उत्सव	
जलोर्मि	– जल + ऊर्मि	
जलोष्मा	– जल + ऊष्मा	
देवर्षि	– देव + ऋषि	
हेमन्तर्तु	– हेमन्त + ऋतु	
शीतर्तु	– शीत + ऋतु	
शिशिरर्तु	– शिशिर + ऋतु	
उत्तमर्ण	– उत्तम + ऋण	
अधमर्ण	– अधम + ऋण	
राजर्षि	– राज + ऋषि	
महर्ण	– महा + ऋण	
महर्तु	– महा + ऋतु	
तवल्कार	– तल + लृकार	

गुण संधि से संबंधित विगत परीक्षाओं में पूछे गए महत्वपूर्ण प्रश्न

महा + उत्सव = महोत्सव
मम + इतर = ममेतर
नव + ऊढा = नवोढा
वर्षा + ऋतु = वर्षर्तु

नोट

अपवाद

- स्वर संधि में अगर 'प्र' के बाद ऊढ़/ऊढ़ा, ऊढ़ी ऊह आ जाए तो वहाँ गुण संधि न होकर वृद्धि संधि होगी।
  जैसे– प्रौढ़–प्र + ऊढ
  प्र + उह = प्रौह
- 'अक्ष' शब्द के बाद अगर 'ऊहिनी' शब्द आ जाए तो वहाँ भी गुण संधि न होकर वृद्धि संधि होगी।
  जैसे–
  अक्षौहिणी–अक्ष + ऊहिनी

(iii) वृद्धि संधि

- अ, आ के बाद ए, ऐ आनें पर दोनों मिलकर ऐ हो जाता है।
  जैसे– एकैक – एक+एक
- अ, आ के बाद ओ, औ आने पर दोनों मिलकर 'औ' हो जाता है।
  जैसे– महौषधि – महा + औषधि

अ/आ – ए/ऐ = ऐ	एक + एक = एकैक एक् अ + एक ऐ एक् ऐ क एकैक महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य मह् आ + ऐ श वर्य ऐ मह् ऐ श्वर्य महैश्वर्य
अ/आ – ओ/औ = औ	परम + औज = परमौज परम् अ + औज औ परम् औ ज परमौज महा + औषधि = महौषधि मह् आ + औषधि औ मह् औ षधि महौषधि

उदाहरण

1. परमैश्वर्य – परम + ऐश्वर्य
2. सदैव – सदा + एव
3. महैश्वर्य – महा + ऐश्वर्य
4. परमौज – परम + ओज
5. महौजस्वी – महा + ओजस्वी
6. वनौषध – वन + औषध
7. महौषध – महा + औषध
8. लोकैषणा – लोक + एषणा
9. हितैषी – हित + एषी
10. तथैव – तथा + एव
11. वसुधैव – वसुधा + एव
12. सदैव – सदा + एव
13. मतैक्य – मत + ऐक्य
14. विचारैक्य – विचार + ऐक्य
15. गंगौक – गंगा + ओक
16. महौज – महा + ओज
17. जलौषधि – जल + औषधि
18. परमौत्सुक्य – परम + औत्सुक्य
19. देवौदार्य – देव + औदार्य
20. विश्वैक्य – विश्व + ऐक्य
21. स्वैच्छिक – स्व + ऐच्छिक

वित + एषणा त्र वितैषणा
परम + एन्द्रजालिक – परमैन्द्रजालिक
गंगा + ऐश्वर्य – गंगैश्वर्य
परम + औदार्य – परमौदार्य
परम + औपचारिक – परमौपचारिक
मृदा + औषधि – मृदौषधि

वृद्धि संधि की पहचान

वृद्धि संधि युक्त शब्दों में अधिकांशत ऐ, औ की मात्राएं (ै, ौ) आती है और इनका विच्छेद इन्ही मात्राओं से होता है।

अपवाद

बिम्ब + ओष्ठ – बिम्बोष्ठ
अधर + ओष्ठ – अधरोष्ठ
दन्त + ओष्ठ – दतोष्ठ

वृद्धि संधि के विशेष नियम

यदि ऋण/दश/वसन/प्र/कंबल/वत्सतर के साथ ऋण शब्द का मेल हो रहा हो तो वहाँ वृद्धि एकादेश 'आर' होकर वृद्धि संधि हो जाती है।

ऋण + ऋण = ऋणार्थ (वृद्धि संधि)
दश + ऋण = दशार्ण (वृद्धि संधि)
वसन + ऋण = वसनार्ण (वृद्धि संधि)
प्र + ऋण = प्राण (वृद्धि संधि)
कम्बल + ऋण = कम्बलार्ण (वृद्धि संधि)
वत्सतर + ऋण = वत्सतरार्ण (वृद्धि संधि)

इन शब्दों के अलावा अन्य किसी शब्द के साथ ऋण शब्द का मेल होने पर 'गुण' एकादेश 'अर' होकर गुण संधि मान्य होगी।

जैसे – उत्तमर्ण = उत्तम + ऋण
महर्ण = महा + ऋण

स्वर शब्द के साथ ईर/ईरी/ईरिणी शब्दों का मेल होने पर वृद्धि एकादेश 'ए' किया जाता है व संधि होगी।

जैसे – स्व + ईर = स्वैर (वृद्धि संधि)

अ/आ स्वर के साथ 'ऋत' शब्द का मेल होने पर वृद्धि एकादेश 'आर' होकर वृद्धि संधि होगी।

पिपासा + ऋत = पिपासार्त (वृद्धि)
सुख + ऋत = सुखार्त (वृद्धि)

'परम' शब्द के साथ 'ऋत' शब्द का मेल होने पर 'गुण' एकादेश 'अर' होकर गुण संधि हो जाती है।

परम + ऋत = परमर्त (गुण संधि)

किसी भी अकारान्त उपसर्ग प्र/उप/अप/अव के साथ 'ऋ' स्वर से आरम्भ होने वाली क्रियापद (ऋच्छति) का मेल होने पर वृद्धि पर एकादेश 'आर' किया जाकर वृद्धि संधि होगी।

जैसे – प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति (वृद्धि संधि)

उप + ऋच्छति = उपार्च्छति (वृद्धि संधि)

अ/आ स्वर के साथ ऐहि/ओम/ओदन शब्दों का मेल होने पर केवल संयोग कार्य ए/ओ किया जाता है।

शिव + एहि = शिवेहि (संयोग)

शुक + ओदन = शुकोदन (संयोग)

शिवाय + ओम = शिवायोम (संयोग)

अ/आ स्वर के साथ ओष्ठ/ओतु शब्द का मेल होने पर विकल्प से वृद्धि एकादेश 'औ' तथा संयोग कार्य 'ओ' दोनों किए जा सकते है।

जैसे –

कण्ठ + ओष्ठ = कठौष्ठ (वृद्धि), कंठोष्ठ (संयोग)

दन्त + ओष्ठ = दन्तौष्ठ (वृद्धि), दंतोष्ठ (संयोग)

(iv) यण संधि

- यदि इ या ई, उ या ऊ, तथा ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो–
  इ, ई का य, उ, ऊ का व, ऋ का र हो जाता है, साथ ही बाद वाले शब्द के पहले स्वर की मात्रा य, व, र में लग जाती है।

उदाहरण

1.	अत्यधिक	–	अति + अधिक
2.	इत्यादि	–	इति + आदि
3.	नद्यागम	–	नदी + आगम
4.	अत्युत्तम	–	अति + उत्तम
5.	अत्यूष्म	–	अति + उष्म
6.	प्रत्येक	–	प्रति + एक
7.	स्वच्छ	–	सु + अच्छ
8.	स्वागत	–	सु + आगत
9.	अन्वेषण	–	अनु + एषण
10.	अन्विति	–	अनु + इति
11.	पित्राज्ञा	–	पितृ + आज्ञा
12.	अत्यल्प	–	अति + अल्प
13.	व्यसन	–	वि + असन
14.	अध्यक्ष	–	अधि + अक्ष
15.	पर्यंक	–	परि + अंक
16.	अभ्यर्थी	–	अभि + अर्थी
17.	अभ्यंतर	–	अभि + अंतर
18.	व्यय	–	वि + अय
19.	पर्यवेक्षक	–	परि + अवेक्षक
20.	व्यर्थ	–	वि + अर्थ
21.	अत्यन्त	–	अति + अन्त
22.	प्रत्यक्ष	–	प्रति + अक्ष
23.	रीव्यनुसार	–	रीति + अनुसार
24.	व्यवहार	–	वि + अवहार
25.	न्यसत	–	नि + अस्त
26.	अध्ययन	–	अधि + अयन
27.	प्रत्यय	–	प्रति + अय
28.	गत्यवरोध	–	गति + अवरोध
29.	गत्यनुसार	–	गति + अनुसार
30.	व्यष्टि	–	वि + अष्टि
31.	प्रर्त्यपण	–	प्रति + अर्पण
32.	अभ्यागत	–	अभि + आगत
33.	प्रत्याशा	–	प्रति + आशा
34.	अत्याचार	–	अति + आचार
35.	व्याकुल	–	वि + आकुल
36.	अभ्यास	–	अभि + आस
37.	अत्यावश्यक	–	अति + आवश्यक
38.	व्यापक	–	वि + आपक
39.	पर्याप्त	–	परि + आप्त
40.	पर्यावरण	–	परि + आवरण
41.	अध्यादेश	–	अधि + आदेश
42.	व्यास	–	वि + आस
43.	व्याप्त	–	वि + आप्त
44.	न्याय	–	नि + आय
45.	व्याकरण	–	वि + आकरण
46.	व्यायाम	–	वि + आयाम
47.	व्याधि	–	वि + आधि
48.	प्रत्यारोपण	–	प्रति + आरोपण
49.	अभ्युदय	–	अभि + उदय
50.	प्रत्युत्तर	–	प्रति + उत्तर
51.	उपर्युक्त	–	उपरि + उक्त
52.	प्रत्युपकार	–	प्रति + उपकार
53.	न्यून	–	नि + ऊन
54.	अत्यैश्वर्य	–	अति + ऐश्वर्य
55.	देव्यपर्ण	–	देवी + अर्पण
56.	नद्यपर्ण	–	नदी + अर्पण
57.	देव्यागमन	–	देवी + आगमन
58.	नार्युचित	–	नारी + उचित
59.	स्त्र्युचित	–	स्त्री + उचित
60.	स्त्र्युपयोगी	–	स्त्री + उपयोगी
61.	नद्युर्मि	–	नदी + ऊर्मि
62.	अत्यौचित्य	–	अति + औचित्य

63. स्वल्प	–	सु + अल्प
64. मन्वन्तर	–	मनु + अन्तर
65. स्वच्छ	–	सु + अच्छ
66. मध्वरि	–	मधु + अरि
67. तन्वंगी	–	तनु + अंगि
68. स्वस्ति	–	सु + अस्ति
69. गुर्वादेश	–	गुरु + आदेश
70. गुर्वाज्ञा	–	गुरु + आज्ञा
71. वध्वागमन	–	वधू + आगमन
72. अन्विति	–	अनु + इति
73. अन्वीक्षण	–	अनु + ईक्षण
74. अन्वीक्षा	–	अनु + ईक्षा
75. गुर्वैदार्य	–	गुरु + औदार्य
76. पित्रनुमति	–	पितृ + अनुमति
77. मात्राज्ञा	–	मातृ + आज्ञा
78. पित्रादेश	–	पितृ + आदेश
79. वक्त्रुद्बोधन	–	वक्तृ + उद्बोधन
80. लाकृति	–	लृ + आकृति
81. सुध्युपास्य	–	सुधी + उपास्य
82. त्र्यम्बकम	–	त्रि + अम्बकम
83. स्वस्त्ययन	–	स्वस्ति + अयन

यण संधि की पहचान
यण संधि युक्त शब्दों में अधिकांशत य, व, र से पहले आधा वर्ण आता है और इनका विच्छेद इन्ही वर्णो से किया जाता है।

शब्द में आधा अक्षर + य, व, र, लिखा हुआ है तो –
आधे अक्षर को पूरा लिख दो
य, व, र के अनुसार मात्रा लगा दो
य हो तो इ/ई की मात्रा
व हो तो उ/ऊ की मात्रा
र हो तो ऋ की मात्रा

य, व, र को छोड़कर शेष, शब्दांश + के आगे लिख दो।

अधि + अधिन = अध्यधीन

देवी + ऐश्वर्य = देव्यैश्वर्य

नोट – यदि किसी शब्द के आरम्भ मे 'स्व' शब्दांश लिखा हुआ है एवम उसका अर्थ अपना/अपनी/अपने प्रकट हो रहा है तो वहाँ संधि विच्छेद करते समय 'स्व' शब्दांश को + से पहले लिखना चाहिए एवं + के बाद यण संधि के अलावा अन्य संधि नियमों के अनुसार शब्द लिखना चाहिए।

स्व + अर्थी = स्वार्थी (दीर्घ संधि)
स्व + अवलम्बन = स्वावलम्बन (यण संधि)
स्व + इच्छा = स्वेच्छा (गुण संधि)
स्वः + ग = स्वर्ग (विसर्ग संधि)
सत्य + आग्रह = सत्याग्रह (दीर्घ संधि)

(v) अयादि संधि

- यदि 'ए' या 'ऐ' 'ओ' या 'औ' के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो 'ए' का अय्, ऐ का आय् हो जाता है।
  जैसे– नयन – ने + अन
  नायक – नै + अक
- ओ का अव, औ का आव हो जाता है।
  जैसे–
  पवन – पो + अन
  पावक – पौ + अक

ए ओ ऐ औ
↓ ↓ ↓ ↓
अय् अव् आय् आव् हो जाता है।

ऐ – अय	ऐ – आय
ने + अन त्र नयन न् ए + अन ↓ अय् न् अय् अ न नयन	गै + इका त्र गायिका ग् ऐ + इका ↓ आय ग् आय् इका गायिका
ओ – अव्	**औ – आव**
हो + अन – हवन ह् ओ + अन ↓ अव् ह् अव् अन हवन	पौ + अन त्र पावन प् औ + अन ↓ आव् प् आव् अन पावन

उदाहरण

1. भवन	–	भो + अन
2. संचय	–	संचे + अ
3. शयन	–	शे + अन
4. नय	–	ने + अ
5. विजयिनी	–	विजे + इनी
6. विनायक	–	विनै + अक
7. विधायिका	–	विधै + इका
8. पायक	–	पै + अक
9. गायक	–	गै + अक
10. विधायक	–	विधै + अक
11. सायक	–	सै + अक
12. हवन	–	हो + अन
13. गवीश	–	गो + ईश
14. श्रवण	–	श्रो + अन
15. विभव	–	विभो + अ

16. भविष्य – भो + इष्य
17. पवित्र – पो + इत्र
18. वटवृक्ष – वटो + वृक्ष
19. श्रावक – श्रौ + अक
20. धाविका – धौ + इका
21. अय – ए + आ
22. चयन – चे + अन
23. नयन – ने + अन
24. गायन – गै + अन

25. शायक – शै + अक
26. भवति – भो + अति
27. भाव – भौ + अ
28. आवि – औ + अ
29. भावुक – भौ + उक
30. शाविक – शौ + इक
31. दायिनी – दै + इनी
32. द्वावेव – द्वौ + एव

नोट –
कुछ शब्द ऐसे होते है जिसमें एक से अधिक संधि भी होती है।

गवेन्द्र–	गो	+	इन्द्र	–	अयादि
	गव	+	इन्द्र	–	गुण
गवाक्ष –	गो	+	अक्ष	–	अयादि
	गव	+	अक्ष	–	गुण

अपवाद

पो + इत्र = पवित्र (अयादि) → अव् – ओ का नियम

पू + इत्र = पवित्र (यण) → ऊ + ई = वि का नियम

कुछ इतिहासकारों नें स्वर संधि के अन्य रूपों को भी स्वीकार किया है जो निम्न है–

पररूप संधि

यदि किसी शब्द के अन्त में अ, आ के बाद ए, ओ में से कोई एक वर्ण हो तो पदान्त अ, आ का पररूप एका देश हो जाता है।

जैसे –

दन्तोष्ठ – दन्त + ओष्ठ
शुद्धोदन – शुद्ध + ओदन
अधरोष्ठ – अधर + ओष्ठ
बिम्बोष्ठ – बिम्ब + ओष्ठ

पूर्व रूप

यदि पद के अन्त में ए, ओ के बाद ह्रस्व 'अ' हो तो अ का पूर्व एकादेश हो जायेगा तथा विकल्प से 'अ' के लुप्त पद स्थान पर अवग्रह 'अ' (ऽ) हो जायेगा।

जैसे –

मनोऽभिलाषा / मनोभिलाषा – मनो + अभिलाषा
यशोऽधिकार / यशोधिकार – यशो + अधिकार
मनोऽभिमान / मनोभिमान – मनो + अभिमान
सोऽपि / सोपि – सो + अपि

स्वर संधि के विशेष नियम

- यदि पदान्त अ के परे अ हो तो विकल्प से अ + अ = अ हो जाता है।

  जैसे –

  पतंजलि – पतत् + अंजलि
  कुलटा – कुल + अटा
  अपंग – अप + अंग
  सारंग – सार + अंग
  सीमत – सीम + अन्त
  मार्तण्ड – मार्त + अंड
  कर्कन्धु – कर्क + अंधु
  मनीषा – मनस् + ईषा

- जिन शब्दों के अन्त में अक्ष व रात्र पद लिखा हो तो संधि विच्छेद करते समय अक्ष का अक्षि, रात्र का रात्रि हो जाता है।

  जैसे –

  प्रत्यक्ष – प्रति + अक्षि
  सहस्त्राक्ष – सहस्त्र + अक्षि
  नवरात्र – नव + रात्रि

2. यंजन संधि

व्यंजन संधि में एक व्यंजन का किसी दूसरे व्यंजन से अथवा स्वर से मेल होने पर दोनों मिलने वाली ध्वनियों में विकार उत्पन्न हो जाता है। इस विकार से होने वाली संधि को व्यंजन संधि कहते है।

जैसे – व्यंजन + व्यंजन – व्यंजन
व्यंजन + स्वर – व्यंजन
स्वर + व्यंजन – व्यंजन

व्यंजन संधि के प्रमुख नियम निम्नलिखित है–

नियम – 01

- यदि प्रत्येक वर्ग के पहले वर्ण अर्थात् क, च, ट, त, प के बाद किसी वर्ग का तीसरा, चौथा वर्ण आए या य, र, ल, व या कोई स्वर आए तो क, च, ट, त, प के स्थान पर अपने ही वर्ग का तीसरा वर्ण अर्थात् ग, ज, ड, द, ब हो जाता है।
- (क् च् ट् त् प्)
  ↓ ↓ ↓ ↓ ↓
  ग् ज् ड् द् ब्

+ (ग, घ, ज, झ, ड, ढ, द, ध, ब, भ, य, व, र, ल) + स्वर

जैसे

वागीश – वाक् + ईश
दिग्गज – दिक् + गज
वाग्दान – वाक् + दान
सद्वाणी – सत् + वाणी
अजंत – अच् + अन्त
अबिंधन – अप् + इंधन
तद्रूप – तत् + रूप
जगदानन्द – जगत् + आन्नद
शब्द – शप् + द
जगदीश – जगत् + ईश
अब्ज – अप् + ज
प्रागैतिहासिक – प्राक् + ऐतिहासिक

वाग्जाल – वाक् + जाल

सद्गति – सत् + गति
दिग्विजय – दिक् + विजय
षडानन – षट् + आनन
ऋगवेद – ऋक् + वेद
उद्घोष – उत् + घोष
सुबन्त – सुप् + अन्त
वागीश्वरी – वाक् + ईश्वरी
चिदानन्द – चित् + आन्नद
सदाचार – सत् + आचार
षड्दर्शन – षट् + दर्शन
वाग्दत्ता – वाक् + दत्ता
दिगम्बर – दिक् + अम्बर
सद्वाणी – सत् + वाणी
उद्दंड – उत् + दंड
उद्धृत – उत् + धृत
सदानन्द – सत् + आन्नद
जगदम्बा – जगत् + अम्बा
वाग्हरि/वाग्धरी – वाक् + हरि
वृहदारण्यक – वृहत् + आरण्यक
सदुपयोग – सत् + उपयोग
सच्चिदानन्द – सत् + चित् + आन्नद
सच्चित् + आन्नद

पश्चात् + वर्ती = पश्चादवर्ती
सत् + धर्म = सद्धर्म
महत + इच्छा = महदिच्छा
सत् + व्यवहार = सद्व्यवहार
सत् + विचार = सद्विचार
अप् + धि = अब्धि

यदि पद के अन्त में स्, त, थ, द, ध, न के बाद श्, च, छ, ज, झ, ञ में कोई वर्ण हो तो पद के अन्त में आए स्, त, थ, द, ध, न के स्थान पर क्रमशः श्, च, छ, ज, झ, ञ हो जायेगा।

- त्, थ्, द्, ध्, न्, स्
  ↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓ का नियम
  च् छ् ज् झ् ञ् श्

जैसे –

रामश्शेते – रामस् + शेते
सच्चित – सत् + चित
शरच्चन्द्र – शरत् + चन्द्र
सच्चरित्र – सत् + चरित्र

नोट –

कुछ उदाहरण ऐसे होते है जो उपर्युक्त दोनों नियमों से भी बनते हैं जो निम्न है –

उज्ज्वल – उत् + ज्वल
विप्पदजाल – विपत्/विपद् + जाल

जगज्जननी – जगत् + जननी
यावज्जीवन – यावत् + जीवन
उच्चारण – उत् + चारण
महच्छत्र – महत् + छत्र
सज्जन – सत् + जन
सद् + जन

- पद के अन्त में त् के बाद न् होने पर त् के स्थान पर न् हो जाता है।

जैसे –

जगन्नाथ – जगत् + नाथ
श्री मन्नारायण – श्रीमद् + नारायण
उन्नयन – उत् + नयन
जगन्निवास – जगत् + निवास
उन्नति – उत् + नति

- यदि पद के अन्त में स्, त्, थ्, द्, ध्, न् के बाद में ष्, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण् हो तो
  स त थ द ध न + ष्, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्
  ↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓ हो जाता है।
  ष् ट् ठ् ड् ढ् ण्

जैसे –

तट्टीका – तत् + टीका
रामष्षष्ठ – रामस् + षष्ठ
उड्डीयते – उत् + डीयते
उड्डयन – उत्/उड् + उयन

- यदि पद के अन्त में त्, थ्, द्, ध्, न् के बाद ल हो तो पद के अन्त में स्थित त, थ, द, ध, न के स्थान पर ल् हो जाता है।

जैसे –

पल्लव – पत्/पद् + लव
उल्लास – उत् + लास
उल्लेख – उत् + लेख